

# हेरिएट टबमैन

डेविड, चित्र: सैमुअल, हिंदी: विदूषक



# हेरिएट टबमैन

डेविड, चित्र: सैमुअल, हिंदी: विदूषक

New York Toronto London Australia Sydney





First Scholastic printing, February 1994



Picture series

*A Picture Book (1911)*

*A Picture Book of Foreign Languages*

*A Picture Book of Simple Objects*



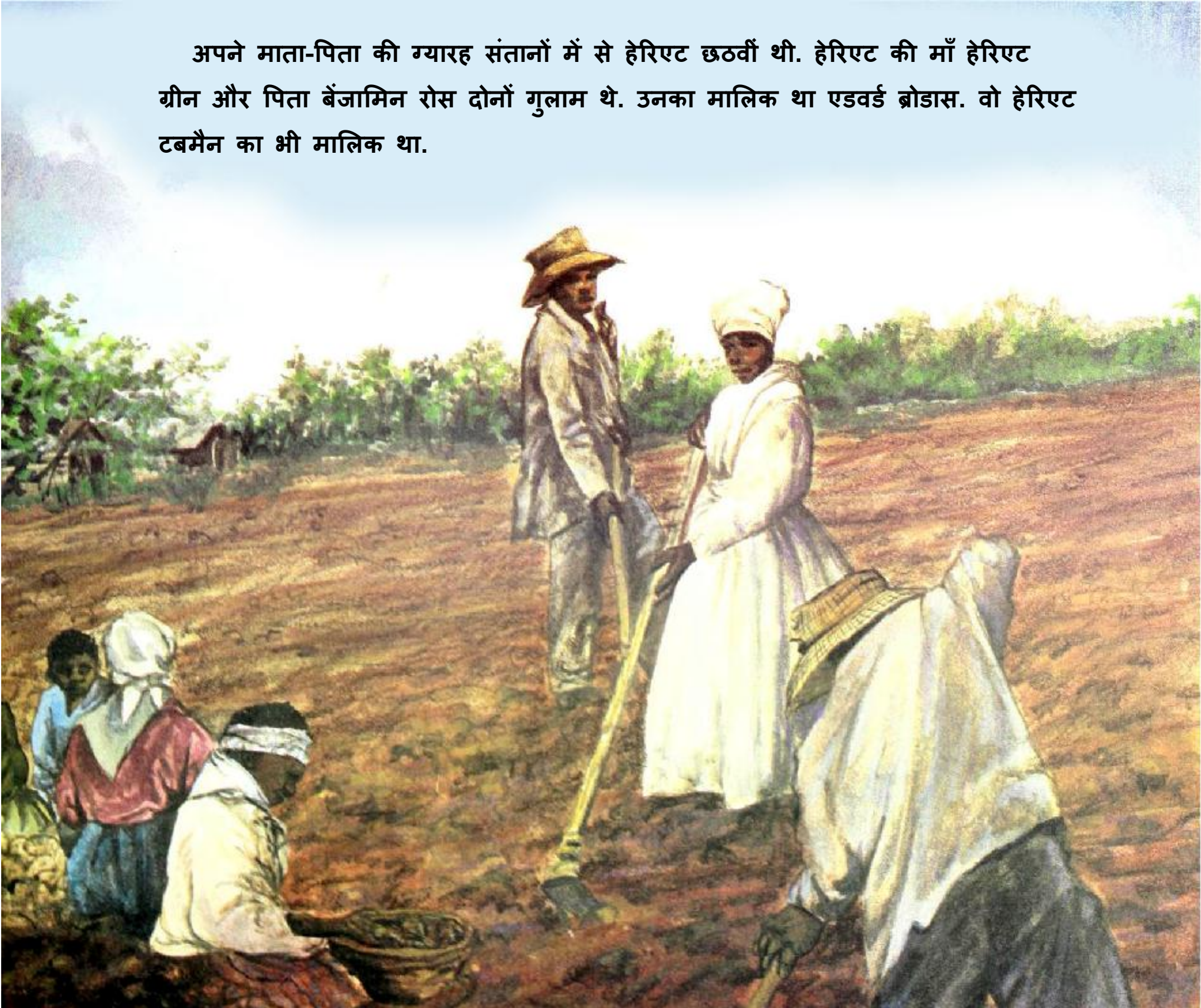


हेरिएट टबमैन का जन्म 1820 या 1821 में डोर्चेस्टर कंट्री, मेरीलैंड, अमरीका में एक बड़े बागान में हुआ था. वैसे उस बागान में एक बड़ा बंगला था, जिसमें बहुत से कमरे थे और ऊंचे दर्जे का फर्नीचर था. पर हेरिएट का जन्म बंगले से काफी दूर लकड़ी की एक बहुत छोटी कुटिया में हुआ. जिस झोपड़ी में हेरिएट पैदा हुई उसमें कोई खिड़की तक नहीं थी. उसका फर्श मिट्टी का था और उसमें एक भी कुर्सी नहीं थी.





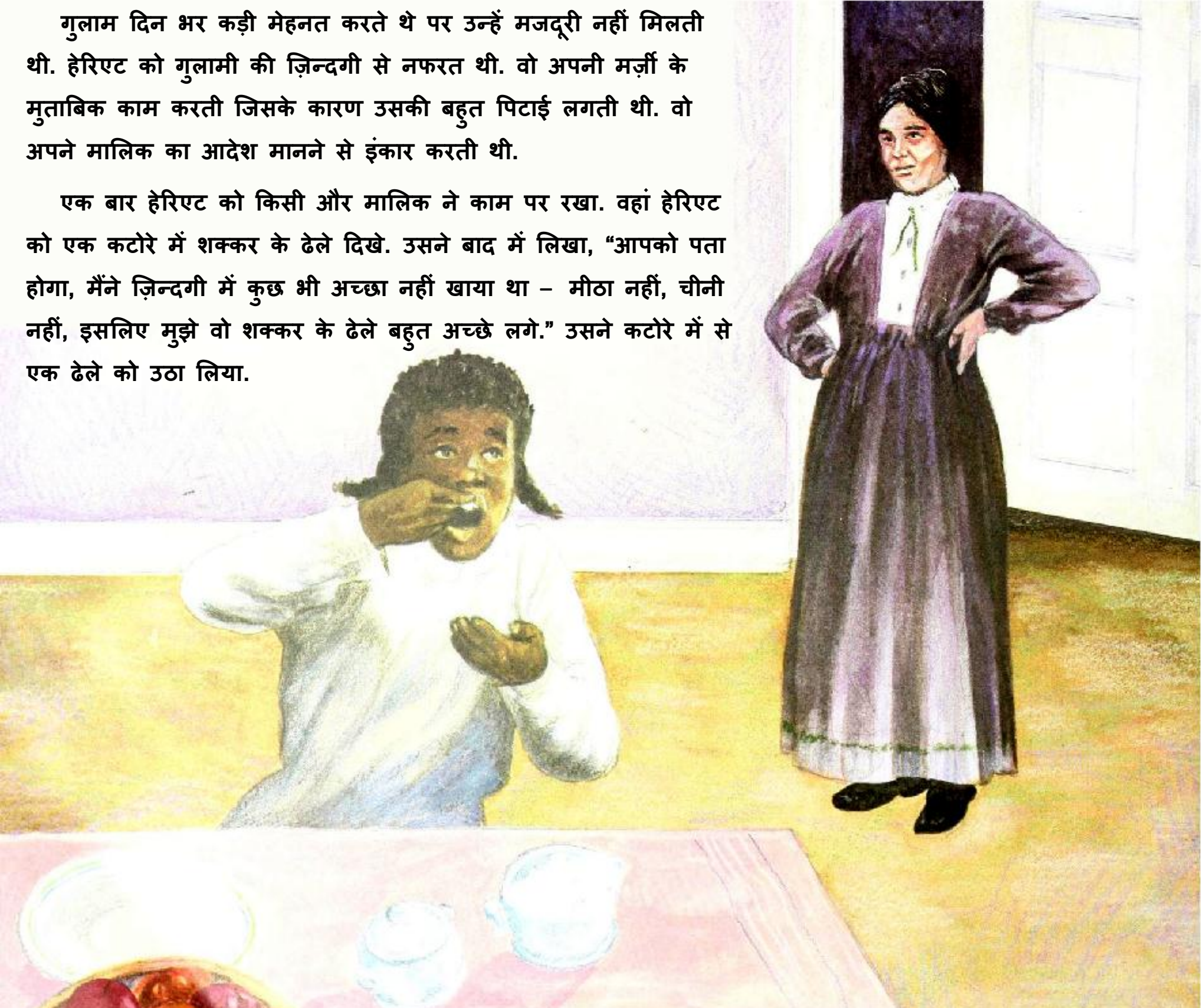
अपने माता-पिता की ग्यारह संतानों में से हेरिएट छठवीं थी. हेरिएट की माँ हेरिएट ग्रीन और पिता बेंजामिन रोस दोनों गुलाम थे. उनका मालिक था एडवर्ड ब्रोडास. वो हेरिएट टबमैन का भी मालिक था.



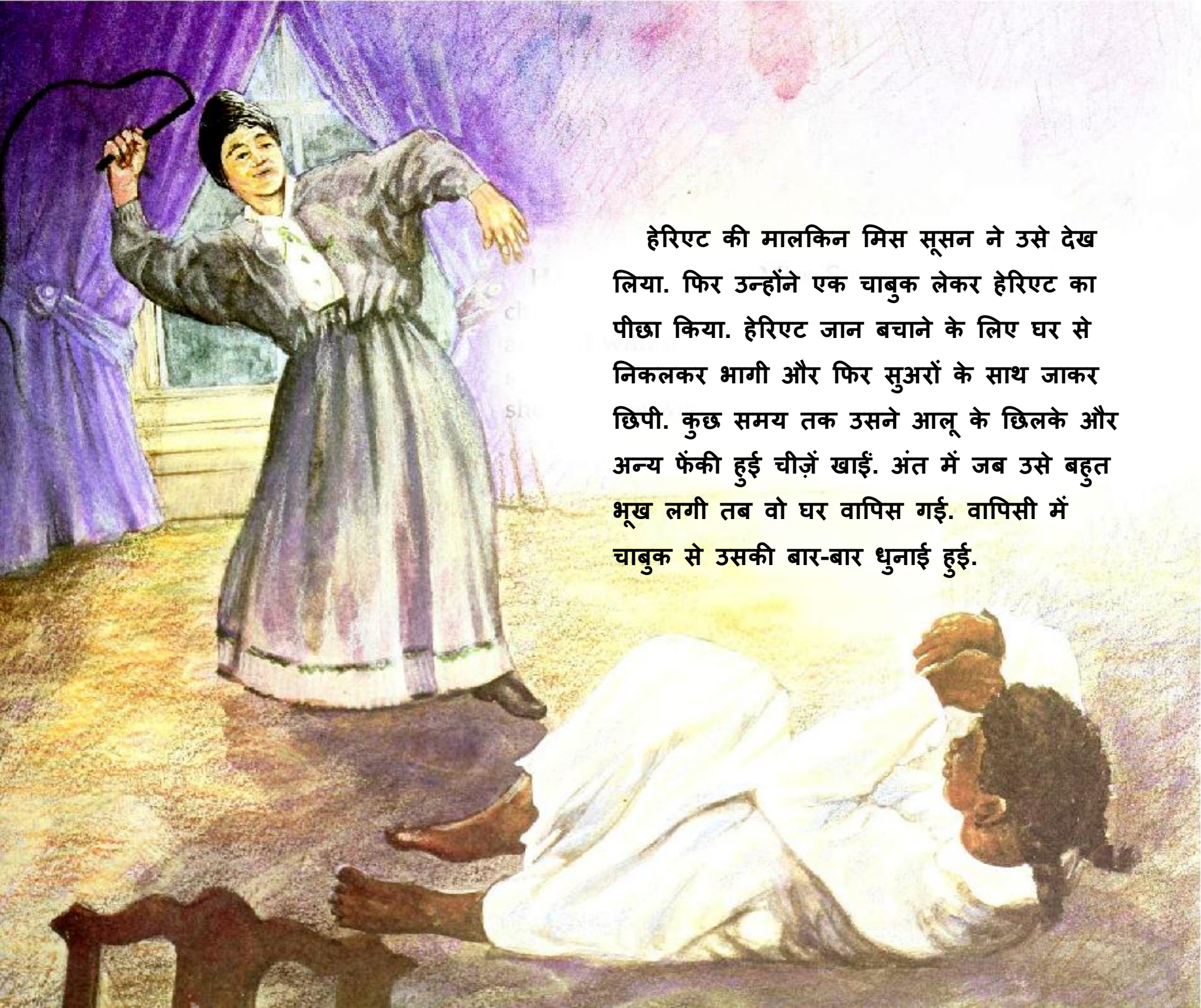


गुलाम दिन भर कड़ी मेहनत करते थे पर उन्हें मजदूरी नहीं मिलती थी. हेरिएट को गुलामी की ज़िन्दगी से नफरत थी. वो अपनी मर्जी के मुताबिक काम करती जिसके कारण उसकी बहुत पिटाई लगती थी. वो अपने मालिक का आदेश मानने से इंकार करती थी.

एक बार हेरिएट को किसी और मालिक ने काम पर रखा. वहां हेरिएट को एक कटोरे में शक्कर के ढेले दिखे. उसने बाद में लिखा, “आपको पता होगा, मैंने ज़िन्दगी में कुछ भी अच्छा नहीं खाया था – मीठा नहीं, चीनी नहीं, इसलिए मुझे वो शक्कर के ढेले बहुत अच्छे लगे.” उसने कटोरे में से एक ढेले को उठा लिया.



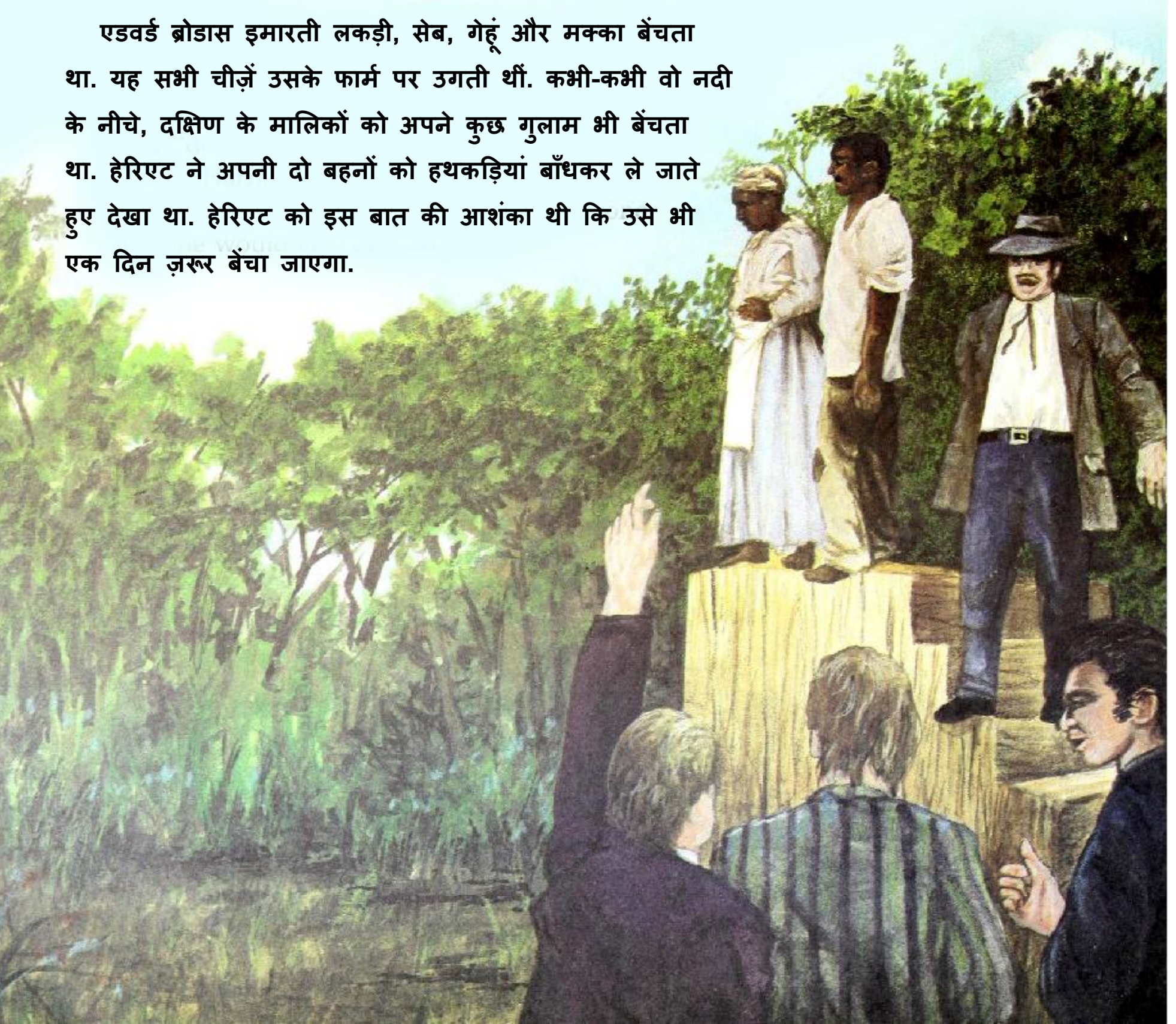




हेरिएट की मालकिन मिस सूसन ने उसे देख लिया. फिर उन्होंने एक चाबुक लेकर हेरिएट का पीछा किया. हेरिएट जान बचाने के लिए घर से निकलकर भागी और फिर सुअरों के साथ जाकर छिपी. कुछ समय तक उसने आलू के छिलके और अन्य फेंकी हुई चीजें खाईं. अंत में जब उसे बहुत भूख लगी तब वो घर वापिस गई. वापिसी में चाबुक से उसकी बार-बार धुनाई हुई.

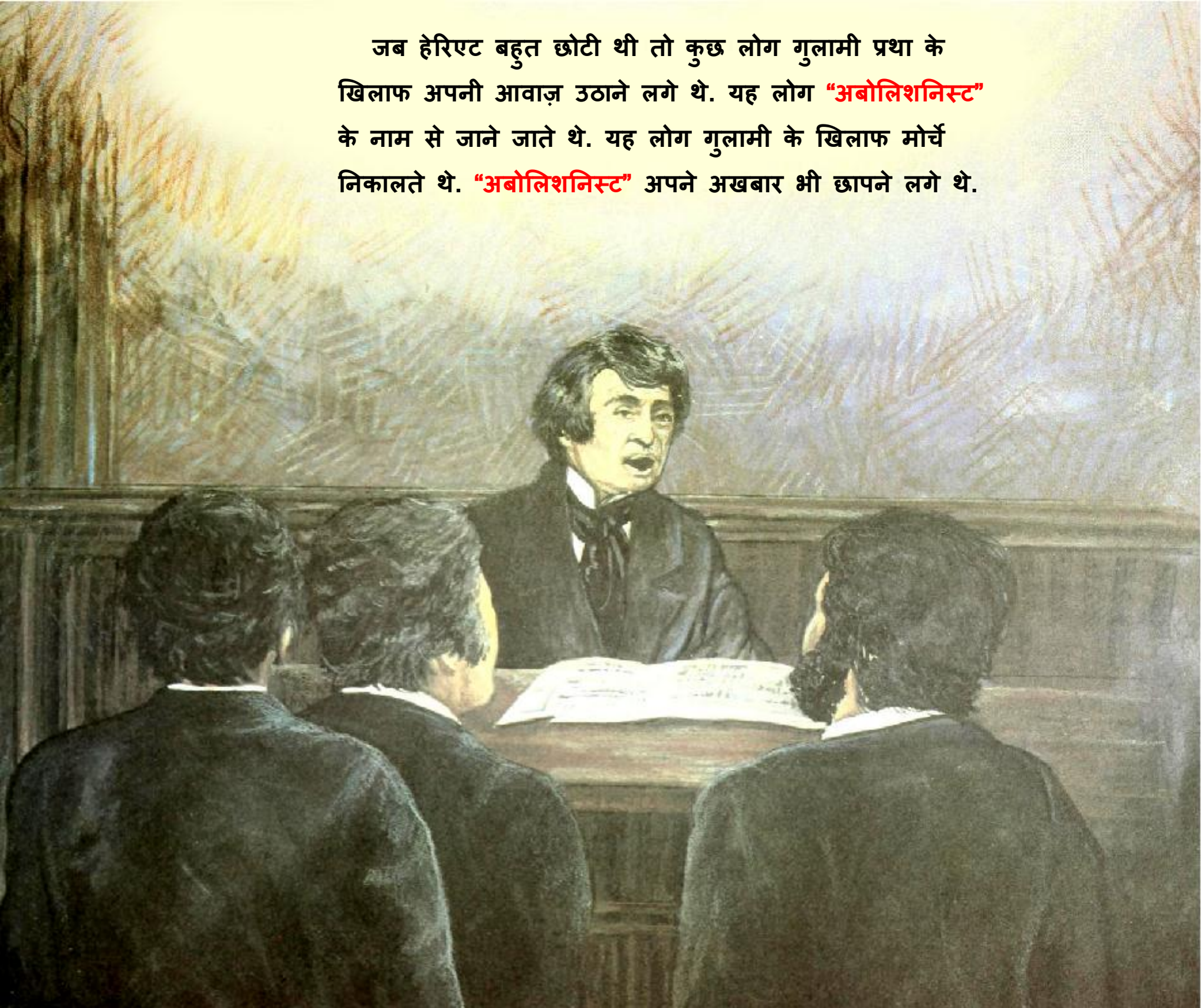


एडवर्ड ब्रोडास इमारती लकड़ी, सेब, गेहूं और मक्का बेचता था. यह सभी चीजें उसके फार्म पर उगती थीं. कभी-कभी वो नदी के नीचे, दक्षिण के मालिकों को अपने कुछ गुलाम भी बेचता था. हेरिएट ने अपनी दो बहनों को हथकड़ियां बाँधकर ले जाते हुए देखा था. हेरिएट को इस बात की आशंका थी कि उसे भी एक दिन ज़रूर बेचा जाएगा.



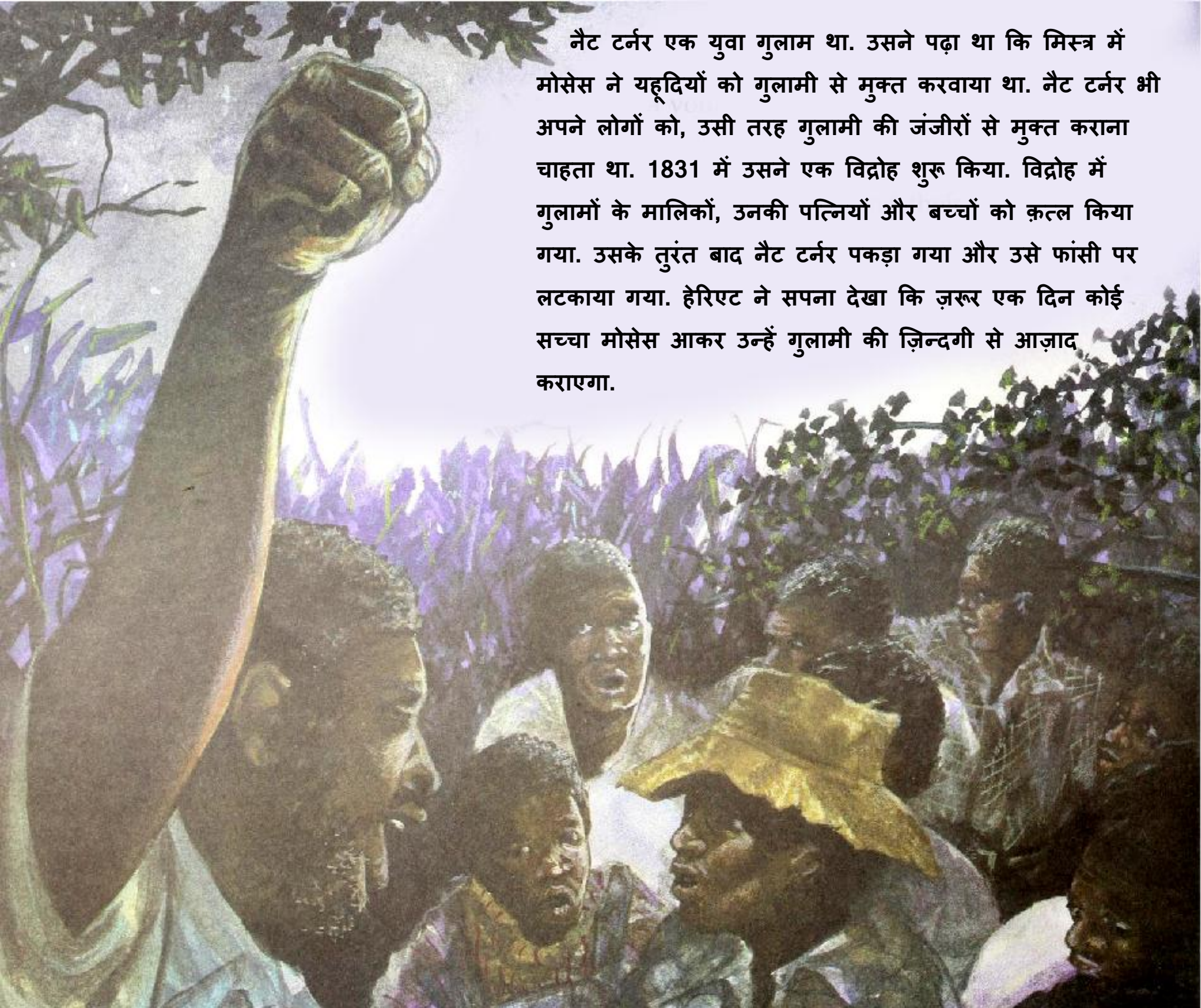


जब हेरिएट बहुत छोटी थी तो कुछ लोग गुलामी प्रथा के खिलाफ अपनी आवाज़ उठाने लगे थे. यह लोग **“अबोलिशनिस्ट”** के नाम से जाने जाते थे. यह लोग गुलामी के खिलाफ मोर्चे निकालते थे. **“अबोलिशनिस्ट”** अपने अखबार भी छापने लगे थे.





नैट टर्नर एक युवा गुलाम था. उसने पढ़ा था कि मिस्त्र में मोसेस ने यहूदियों को गुलामी से मुक्त करवाया था. नैट टर्नर भी अपने लोगों को, उसी तरह गुलामी की जंजीरों से मुक्त कराना चाहता था. 1831 में उसने एक विद्रोह शुरू किया. विद्रोह में गुलामों के मालिकों, उनकी पत्नियों और बच्चों को क़त्ल किया गया. उसके तुरंत बाद नैट टर्नर पकड़ा गया और उसे फांसी पर लटकाया गया. हेरिएट ने सपना देखा कि ज़रूर एक दिन कोई सच्चा मोसेस आकर उन्हें गुलामी की ज़िन्दगी से आज़ाद कराएगा.

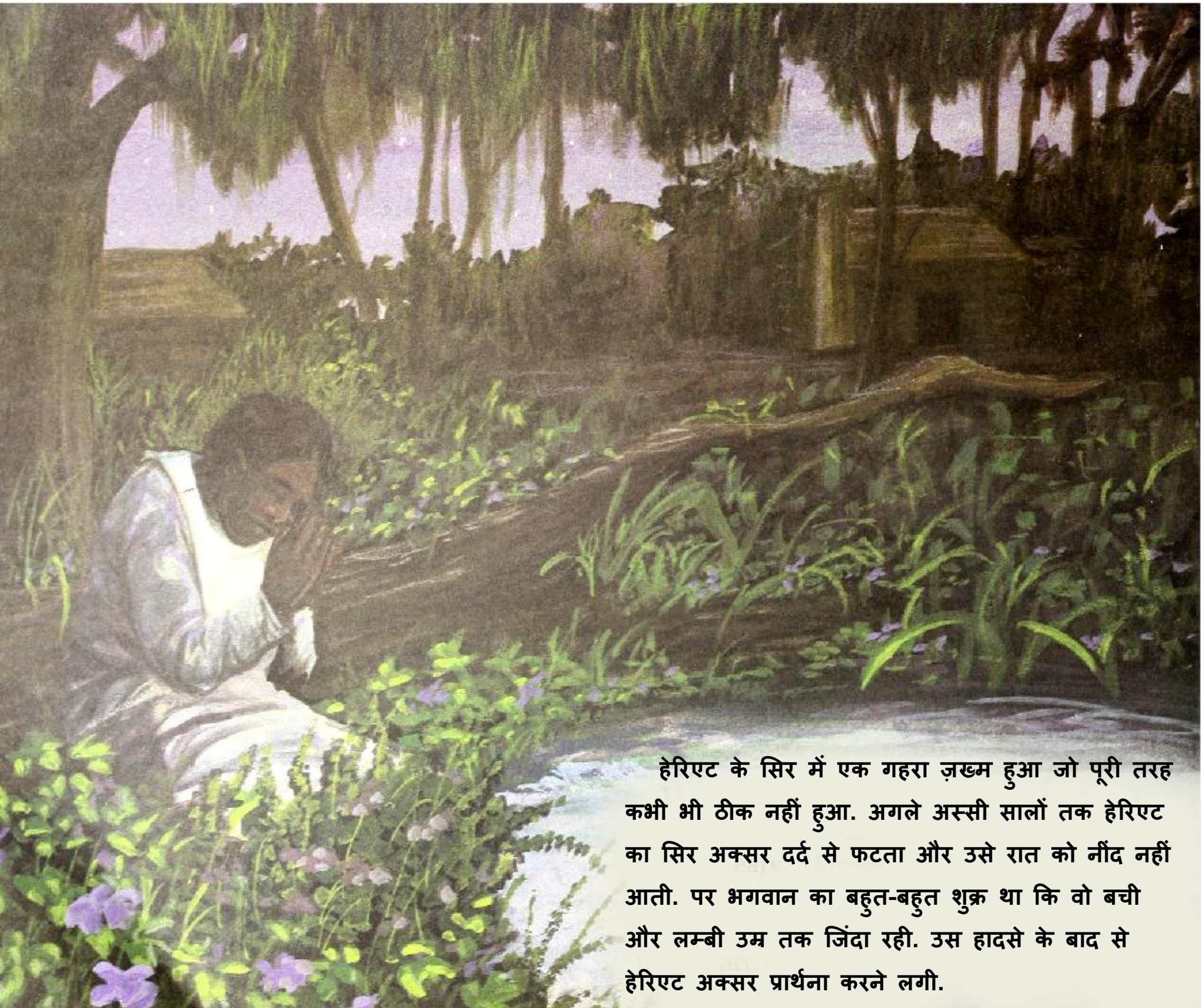




1835 में एक मालिक अपने एक गुलाम को पकड़ने के लिए दौड़ रहा था।  
मालिक ने गुलाम पर एक लोहे का वज़न फेंका, जो इत्तिफाक से हेरिएट को  
जाकर लगा। उस दिन हेरिएट मरते-मरते बची।





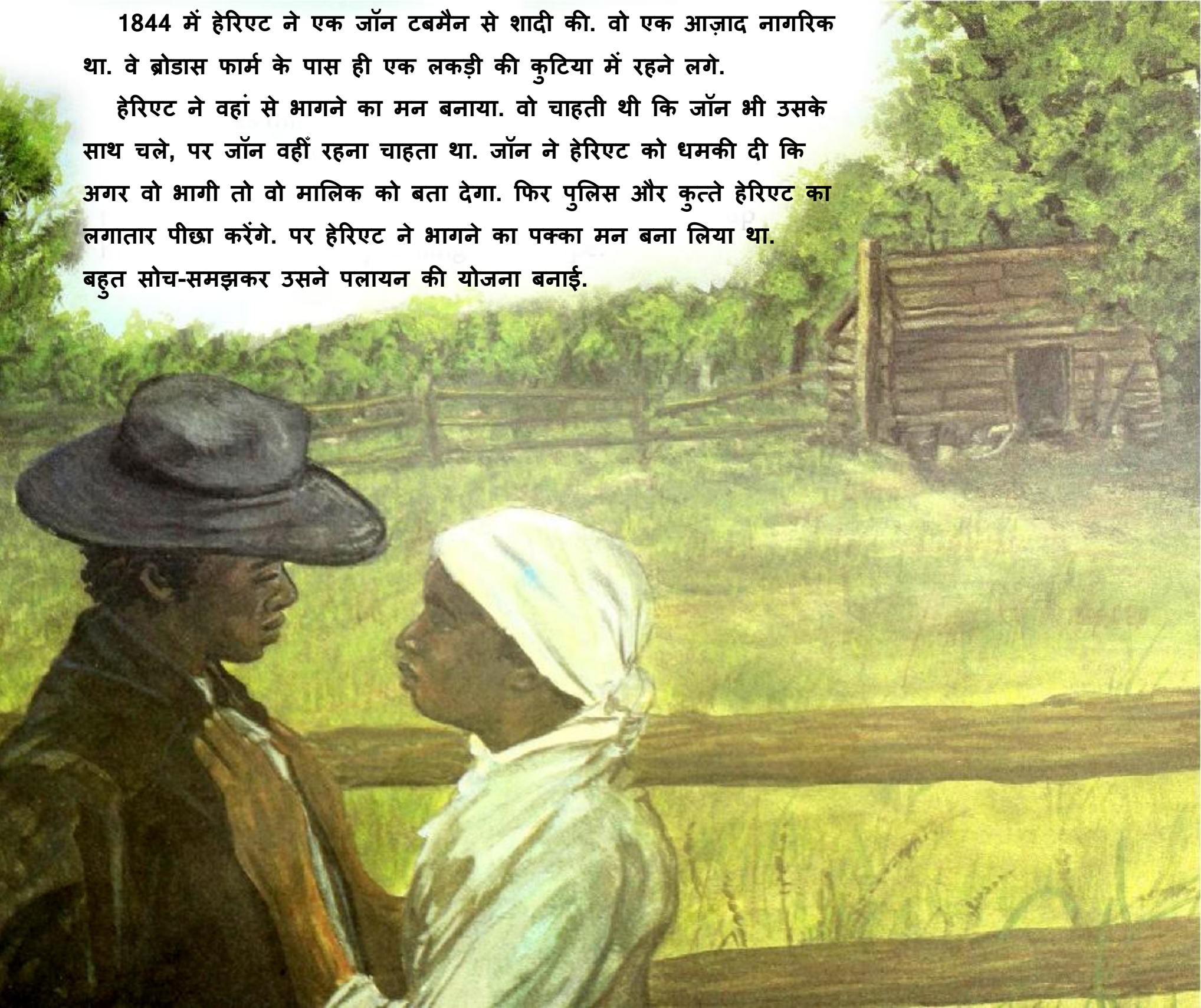


हेरिएट के सिर में एक गहरा ज़ख्म हुआ जो पूरी तरह कभी भी ठीक नहीं हुआ. अगले अस्सी सालों तक हेरिएट का सिर अक्सर दर्द से फटता और उसे रात को नींद नहीं आती. पर भगवान का बहुत-बहुत शुक्र था कि वो बची और लम्बी उम्र तक जिंदा रही. उस हादसे के बाद से हेरिएट अक्सर प्रार्थना करने लगी.



1844 में हेरिएट ने एक जॉन टबमैन से शादी की. वो एक आज़ाद नागरिक था. वे ब्रोडस फार्म के पास ही एक लकड़ी की कुटिया में रहने लगे.

हेरिएट ने वहां से भागने का मन बनाया. वो चाहती थी कि जॉन भी उसके साथ चले, पर जॉन वहीं रहना चाहता था. जॉन ने हेरिएट को धमकी दी कि अगर वो भागी तो वो मालिक को बता देगा. फिर पुलिस और कुत्ते हेरिएट का लगातार पीछा करेंगे. पर हेरिएट ने भागने का पक्का मन बना लिया था. बहुत सोच-समझकर उसने पलायन की योजना बनाई.





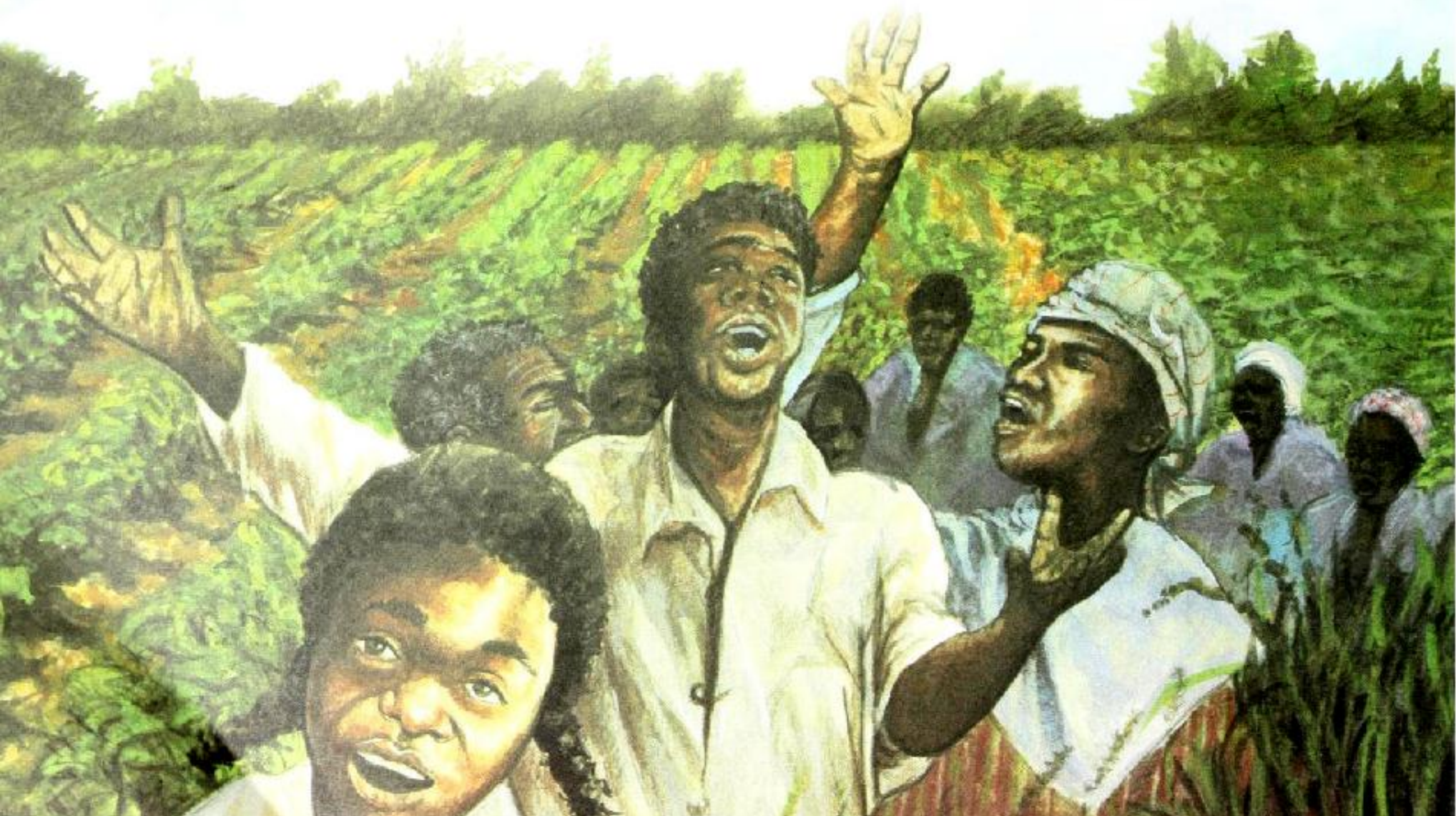
अक्सर गुलाम मजदूर खेतों में काम करते हुए गीत गाते थे. भागने से एक दिन पहले उसने बाकी लोगों के साथ यह गीत गाया. गीत के शब्दों में बाकी गुलामों के लिए भागने का सन्देश छिपा था.

“जब रथ आएगा,

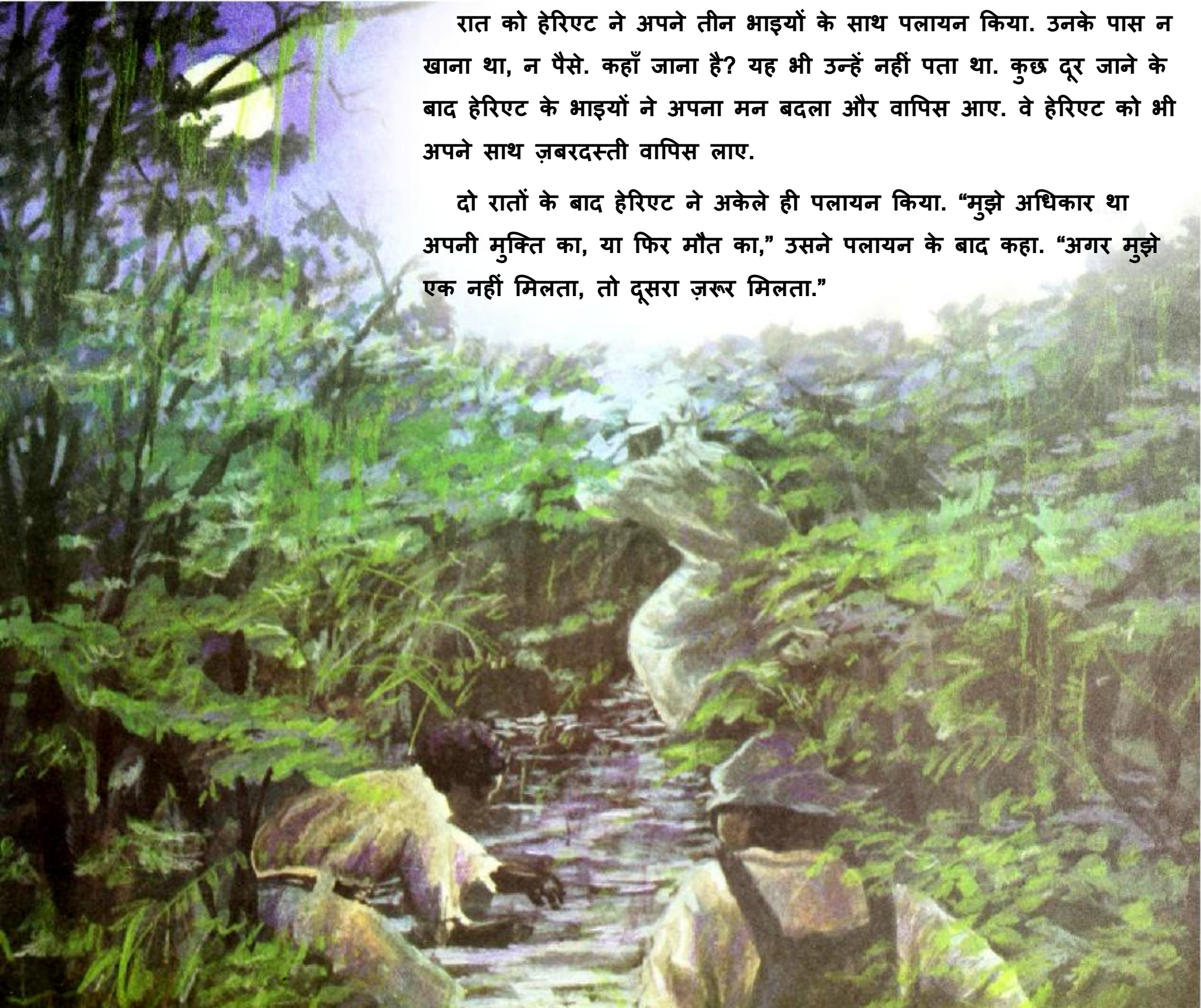
तब मैं तुम्हें छोड़कर जाऊंगी.

मैं अपनी मंजिल तक पहुँचूंगी.

हेरिएट टबमैन की “मंजिल” उत्तरी अमरीका पहुँचने की थी, जहाँ पर उसे गुलामी से मुक्ति मिलती.



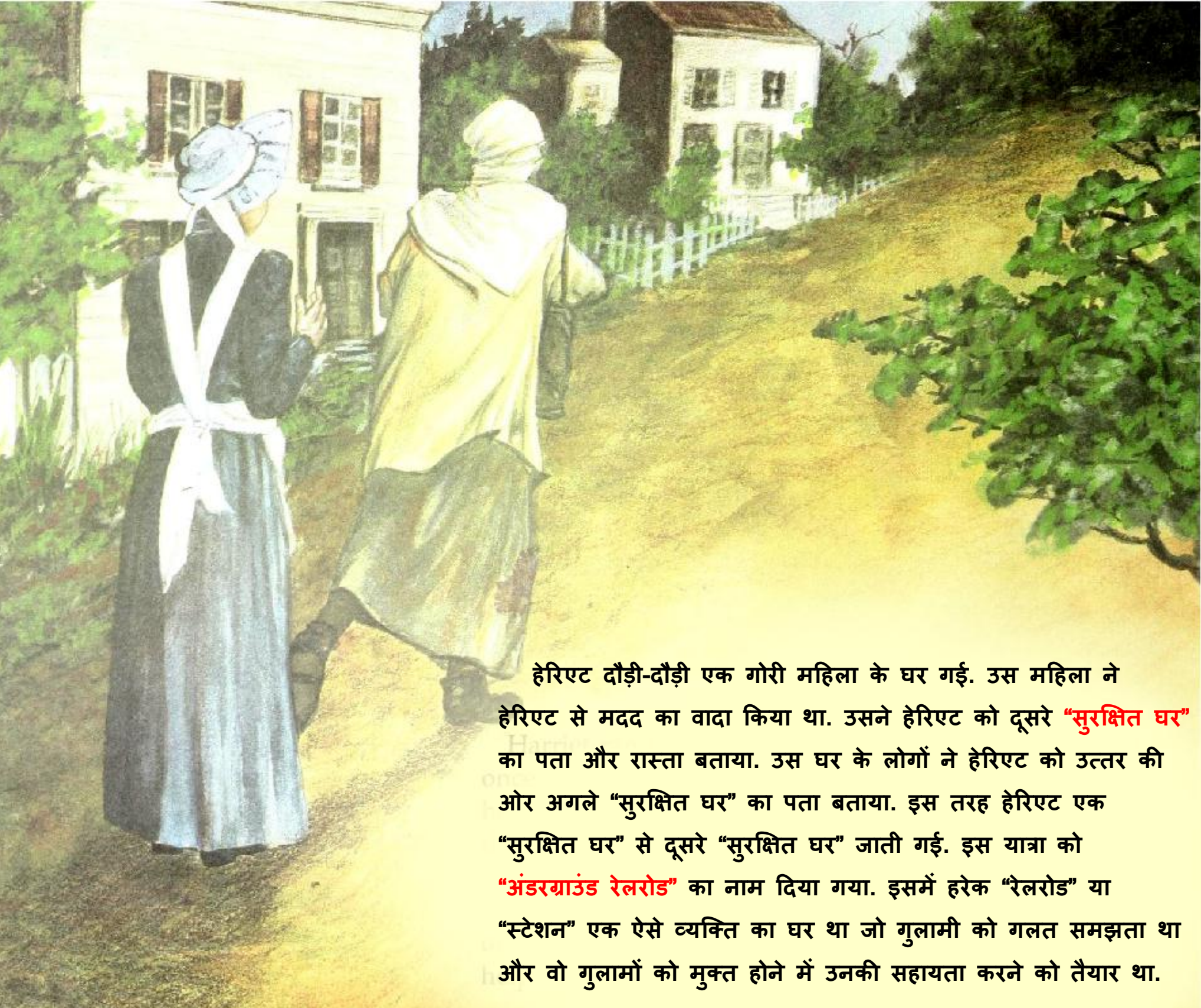




रात को हेरिएट ने अपने तीन भाइयों के साथ पलायन किया. उनके पास न खाना था, न पैसे. कहाँ जाना है? यह भी उन्हें नहीं पता था. कुछ दूर जाने के बाद हेरिएट के भाइयों ने अपना मन बदला और वापिस आए. वे हेरिएट को भी अपने साथ ज़बरदस्ती वापिस लाए.

दो रातों के बाद हेरिएट ने अकेले ही पलायन किया. “मुझे अधिकार था अपनी मुक्ति का, या फिर मौत का,” उसने पलायन के बाद कहा. “अगर मुझे एक नहीं मिलता, तो दूसरा ज़रूर मिलता.”

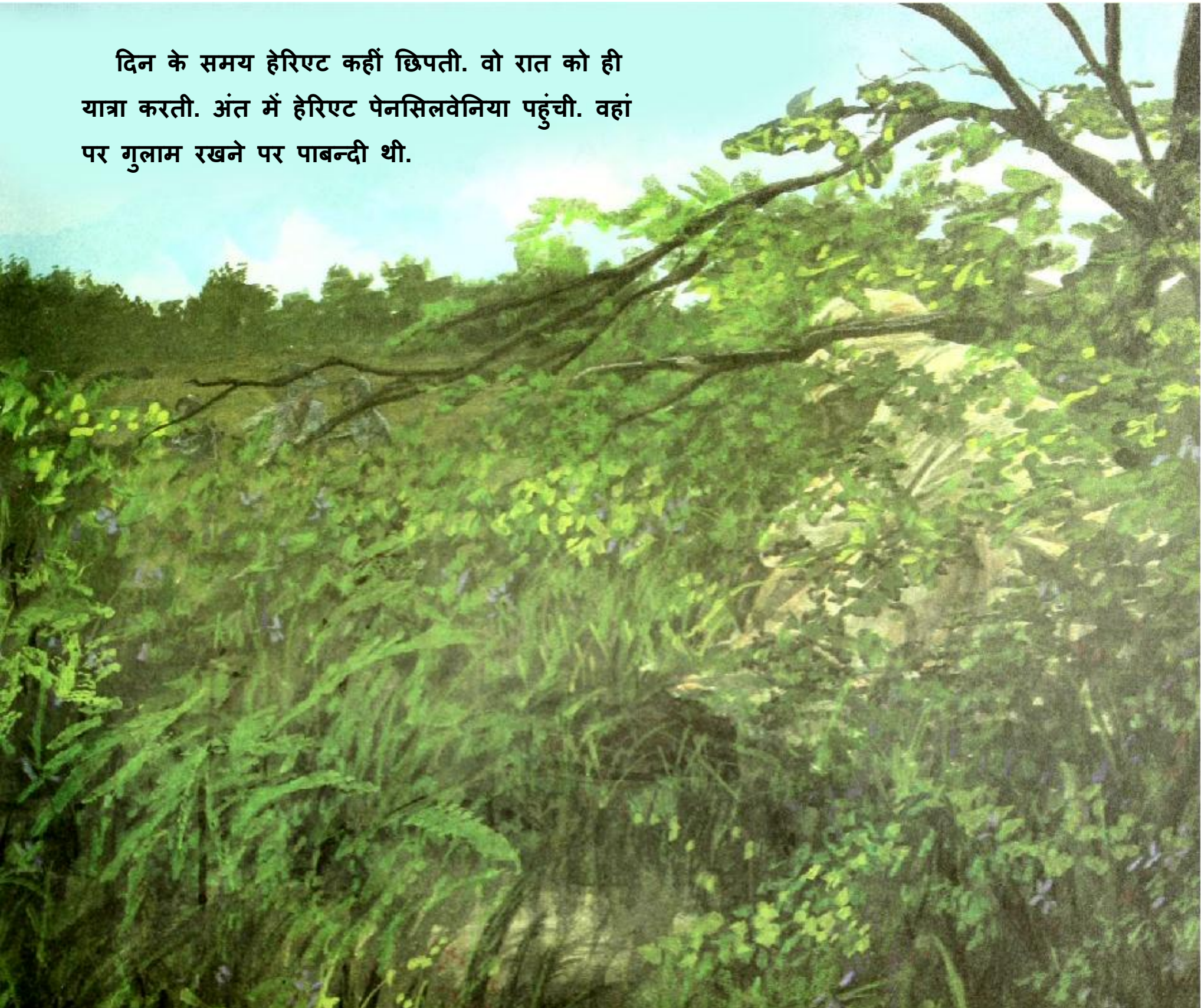




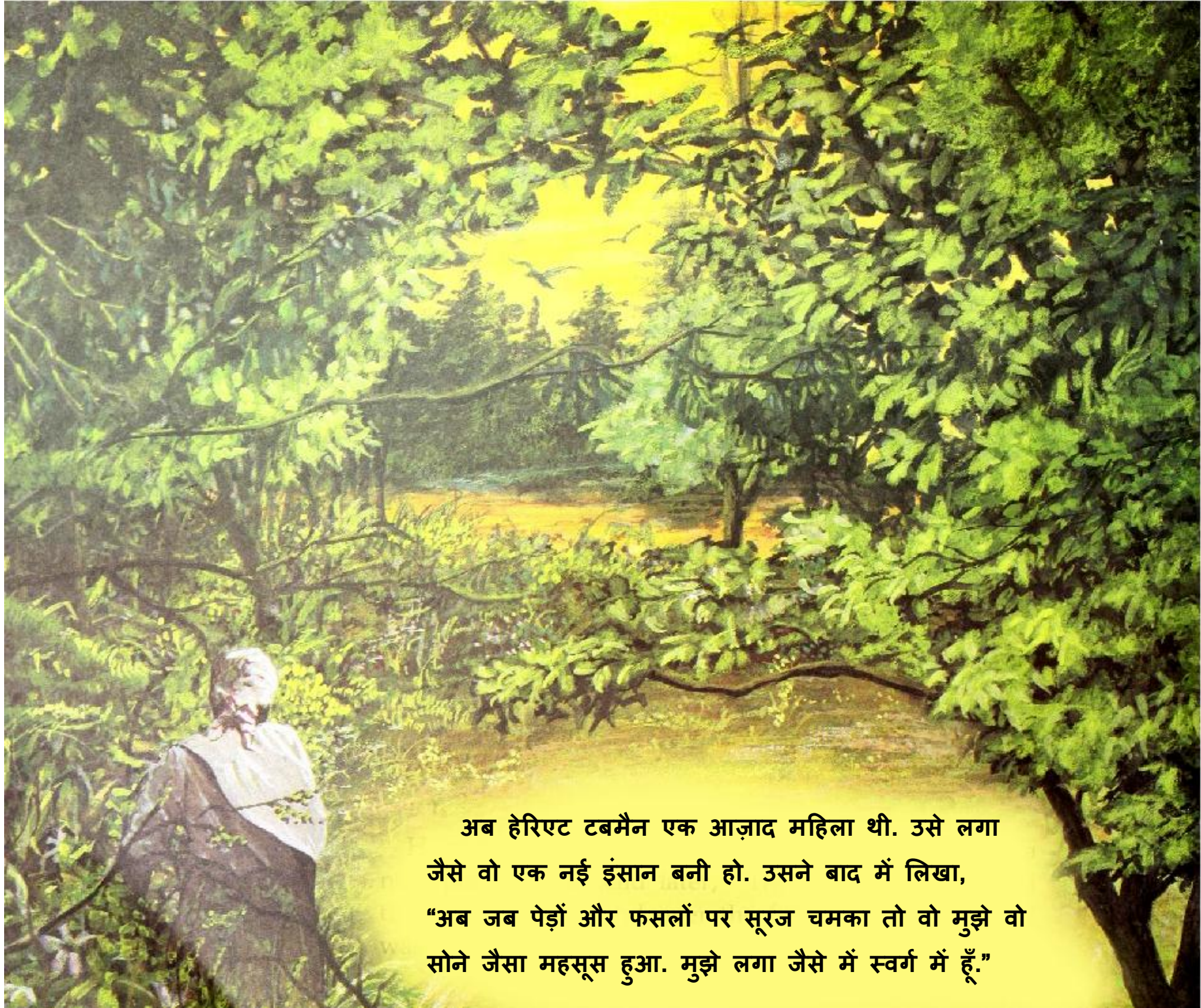
हेरिएट दौड़ी-दौड़ी एक गोरी महिला के घर गई. उस महिला ने हेरिएट से मदद का वादा किया था. उसने हेरिएट को दूसरे “सुरक्षित घर” का पता और रास्ता बताया. उस घर के लोगों ने हेरिएट को उत्तर की ओर अगले “सुरक्षित घर” का पता बताया. इस तरह हेरिएट एक “सुरक्षित घर” से दूसरे “सुरक्षित घर” जाती गई. इस यात्रा को “अंडरग्राउंड रेलरोड” का नाम दिया गया. इसमें हरेक “रेलरोड” या “स्टेशन” एक ऐसे व्यक्ति का घर था जो गुलामी को गलत समझता था और वो गुलामों को मुक्त होने में उनकी सहायता करने को तैयार था.



दिन के समय हेरिएट कहीं छिपती. वो रात को ही यात्रा करती. अंत में हेरिएट पेनसिलवेनिया पहुंची. वहां पर गुलाम रखने पर पाबन्दी थी.



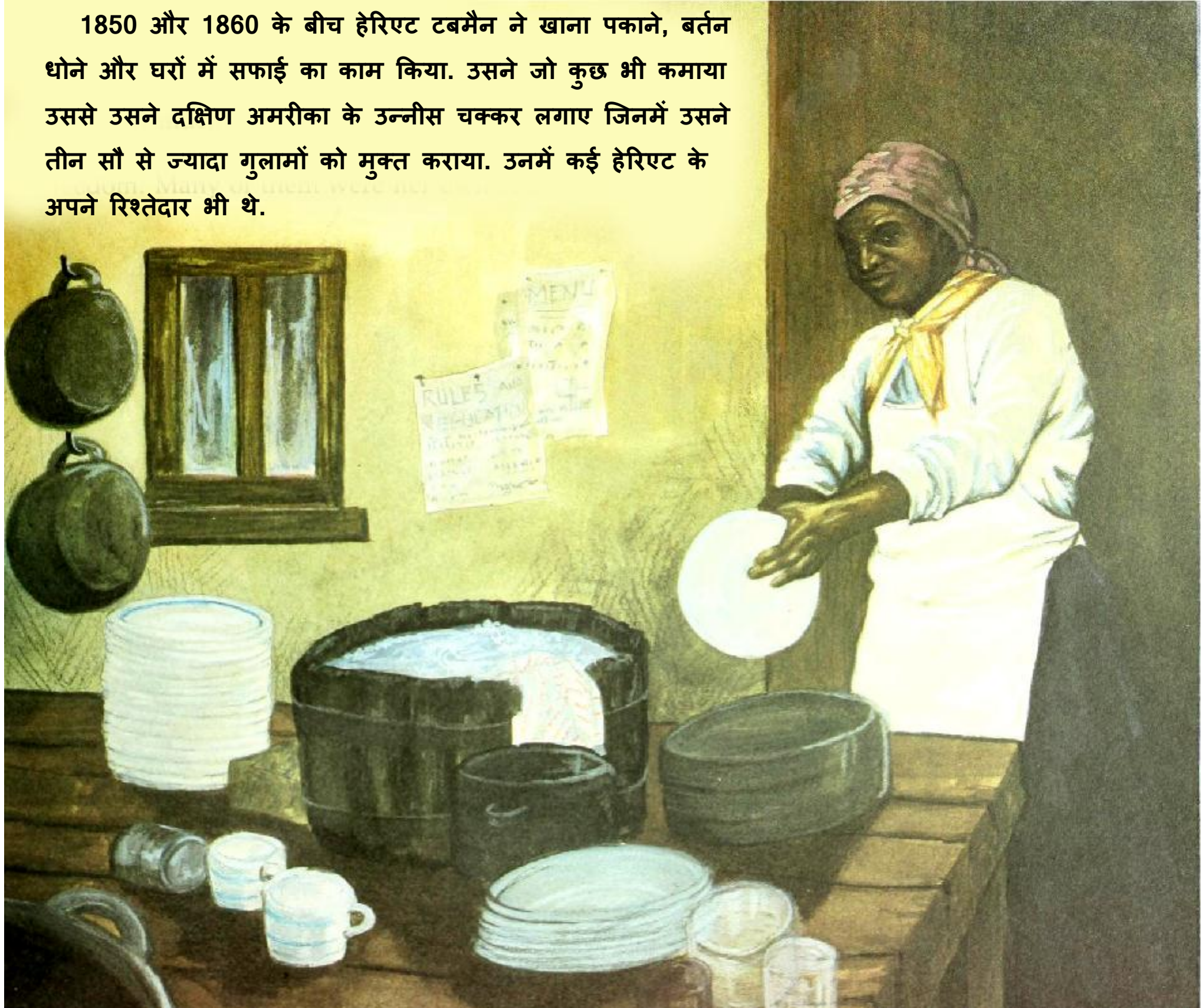




अब हेरिएट टबमैन एक आज़ाद महिला थी. उसे लगा जैसे वो एक नई इंसान बनी हो. उसने बाद में लिखा, “अब जब पेड़ों और फसलों पर सूरज चमका तो वो मुझे वो सोने जैसा महसूस हुआ. मुझे लगा जैसे मैं स्वर्ग में हूँ.”

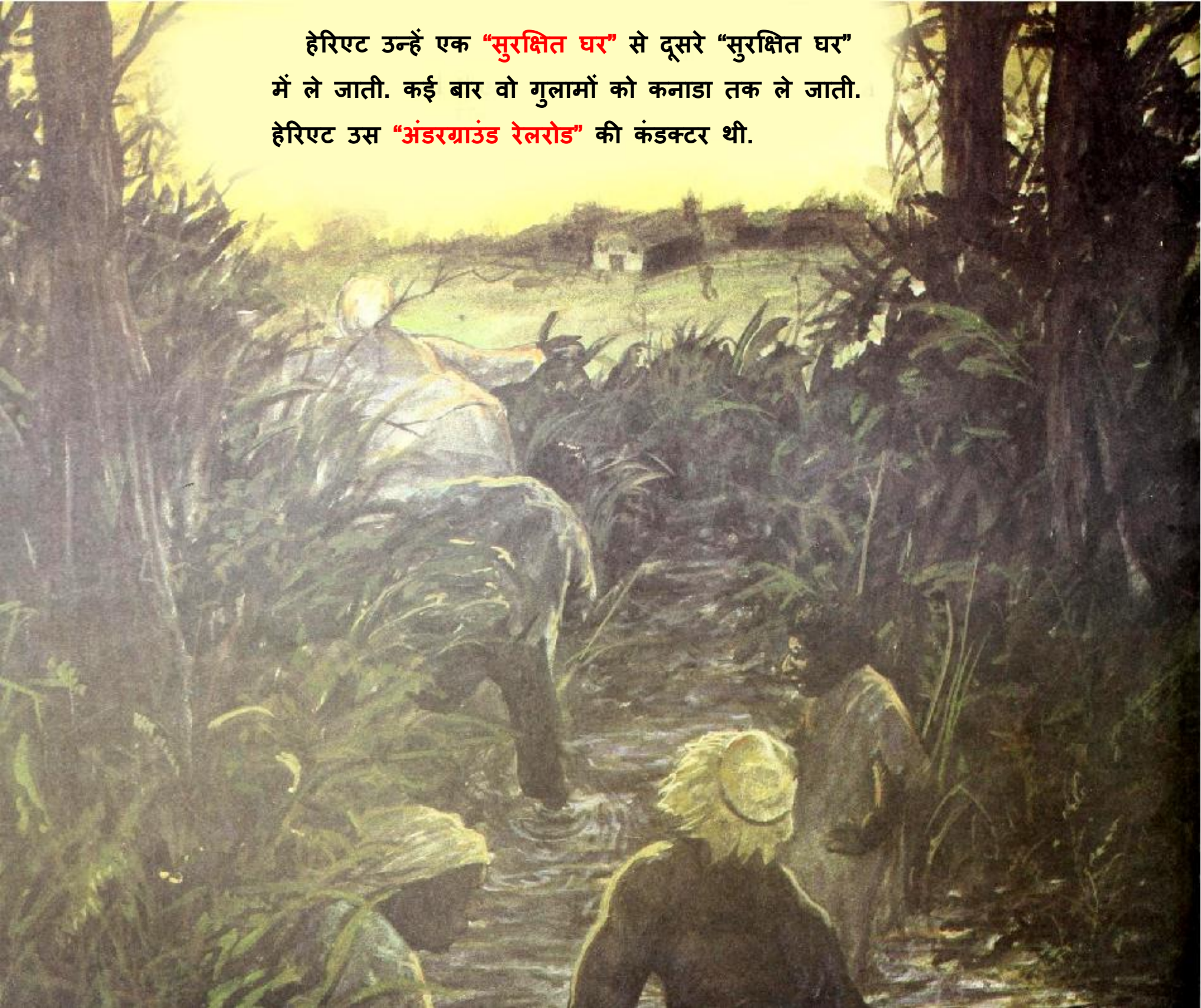


1850 और 1860 के बीच हेरिएट टबमैन ने खाना पकाने, बर्तन धोने और घरों में सफाई का काम किया. उसने जो कुछ भी कमाया उससे उसने दक्षिण अमरीका के उन्नीस चक्कर लगाए जिनमें उसने तीन सौ से ज्यादा गुलामों को मुक्त कराया. उनमें कई हेरिएट के अपने रिश्तेदार भी थे.





हेरिएट उन्हें एक **“सुरक्षित घर”** से दूसरे **“सुरक्षित घर”**  
में ले जाती. कई बार वो गुलामों को कनाडा तक ले जाती.  
हेरिएट उस **“अंडरग्राउंड रेलरोड”** की कंडक्टर थी.



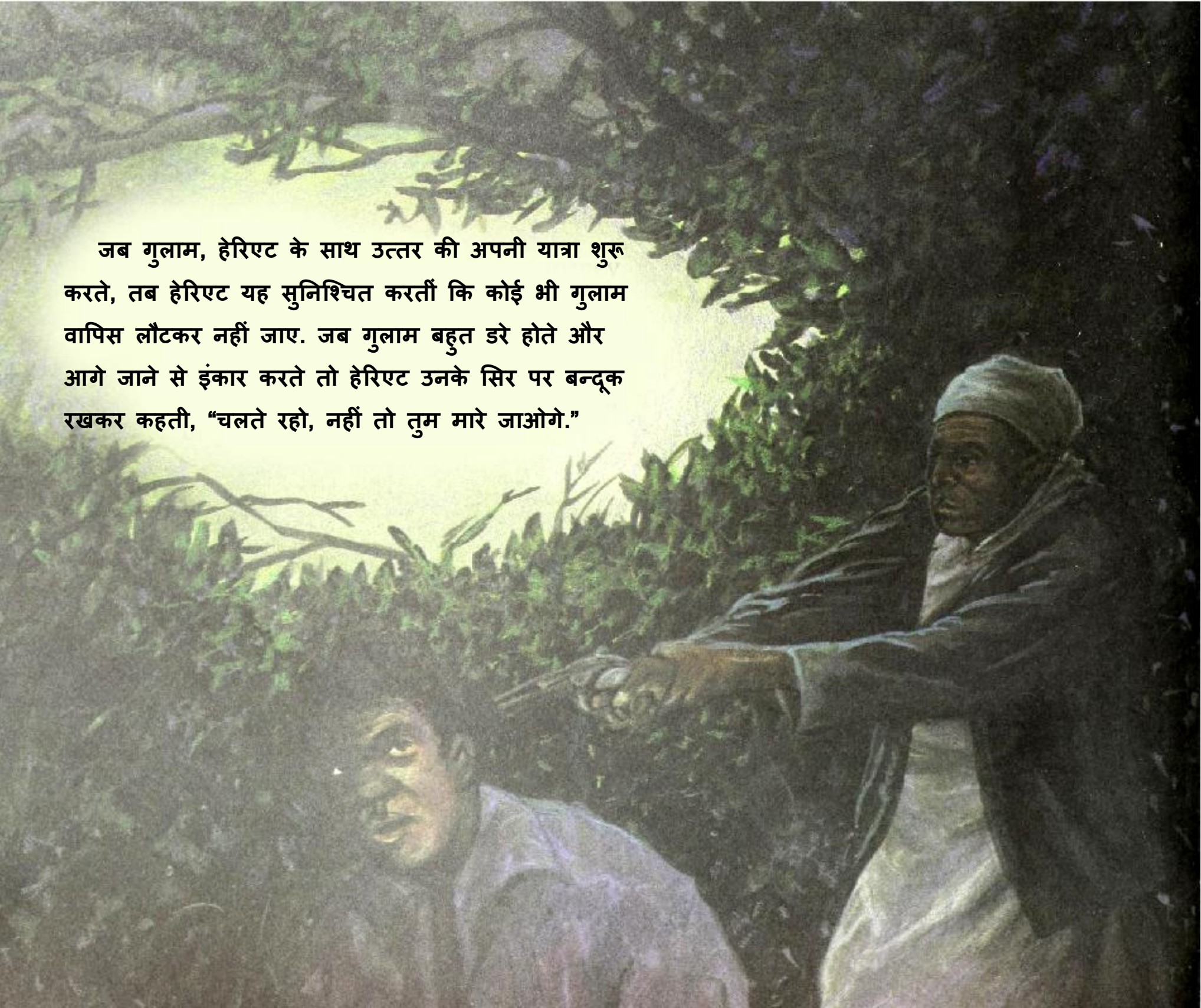


कई बार हेरिएट भेष बदलकर बूढ़ी औरत या बूढ़ा आदमी बन जाती.  
वो गुप्त संदेशों के प्रचार के लिए गीतों का उपयोग करती. जब पलायन  
करने वाले लोग छिपे होते और बाहर आना सुरक्षित होता तब हेरिएट  
कोई खुशी का गीत गाती. पलायन करने वाले गुलाम, हेरिएट की भारी  
और गहरी आवाज़ से उसे तुरंत पहचान जाते.





जब गुलाम, हेरिएट के साथ उत्तर की अपनी यात्रा शुरू करते, तब हेरिएट यह सुनिश्चित करती कि कोई भी गुलाम वापिस लौटकर नहीं जाए. जब गुलाम बहुत डरे होते और आगे जाने से इंकार करते तो हेरिएट उनके सिर पर बन्दूक रखकर कहती, “चलते रहो, नहीं तो तुम मारे जाओगे.”





सालों बाद हेरिएट ने गर्व से कहा, “मैंने अपनी ट्रेन को कभी भी पटरी से उतरने नहीं दिया. मैंने एक भी मुसाफिर नहीं खोया.”

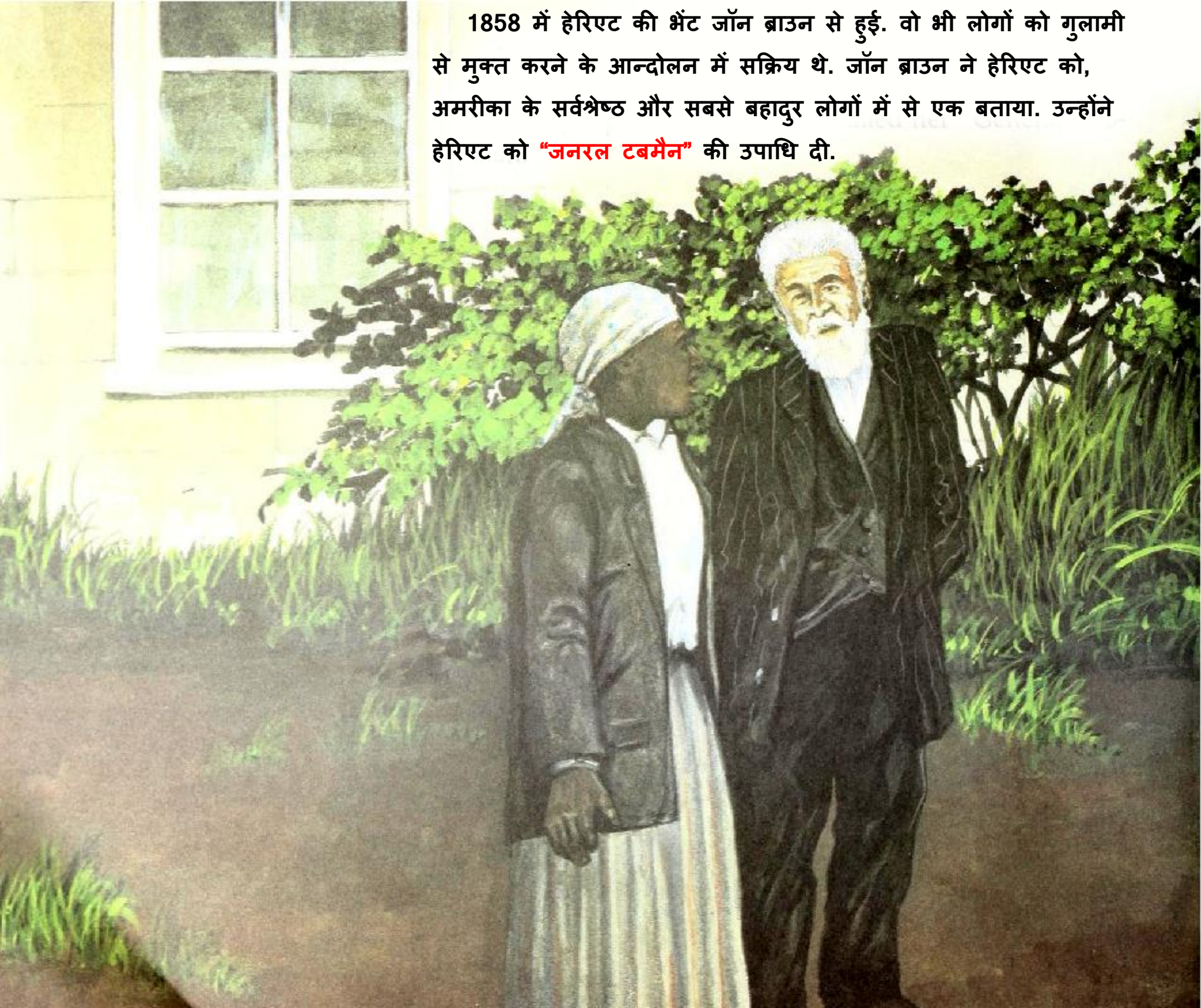
हेरिएट को लोग प्यार से “मोसेस” बुलाते थे क्योंकि उसने अपने लोगों को गुलामी और दासता से मुक्ति दिलाई थी. हेरिएट को पकड़वने पर गोरी सरकार ने बड़ा इनाम रखा था. पर अंत में हेरिएट को कोई नहीं पकड़ पाया.

जिंदा या मुर्दा  
हेरिएट टबमैन



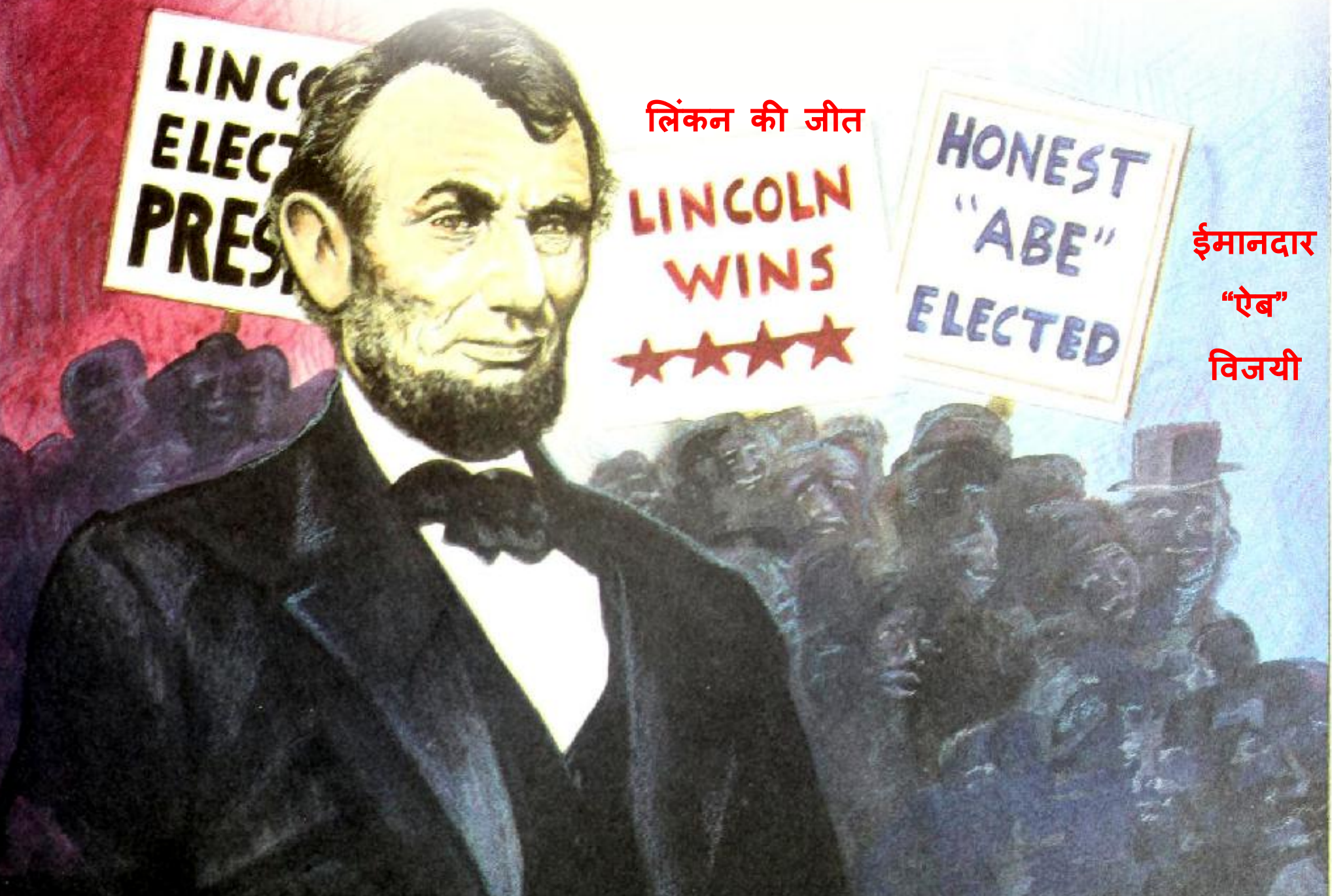


1858 में हेरिएट की भेंट जॉन ब्राउन से हुई. वो भी लोगों को गुलामी से मुक्त करने के आन्दोलन में सक्रिय थे. जॉन ब्राउन ने हेरिएट को, अमरीका के सर्वश्रेष्ठ और सबसे बहादुर लोगों में से एक बताया. उन्होंने हेरिएट को **“जनरल टबमैन”** की उपाधि दी.





1860 में अब्राहम लिंकन अमरीका के राष्ट्रपति चुने गए. तब दक्षिण के ग्यारह राज्यों ने अमरीका से अपना नाता तोड़ा. वे लिंकन जैसे व्यक्ति – जिसे गुलामी से चिढ़ थी, को अपना लीडर मानने को तैयार नहीं थे.

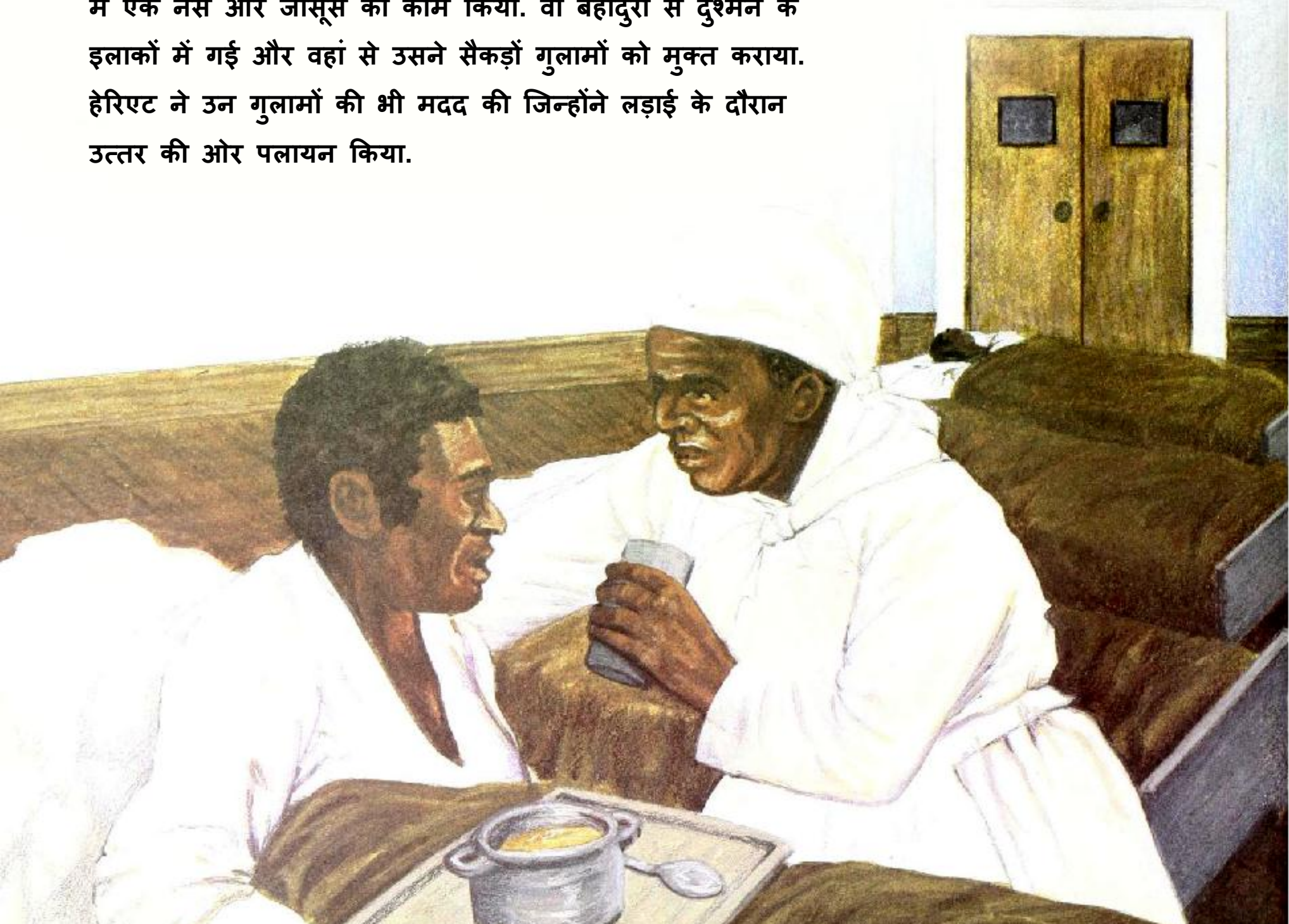


लिंकन की जीत

ईमानदार  
“ऐब”  
विजयी

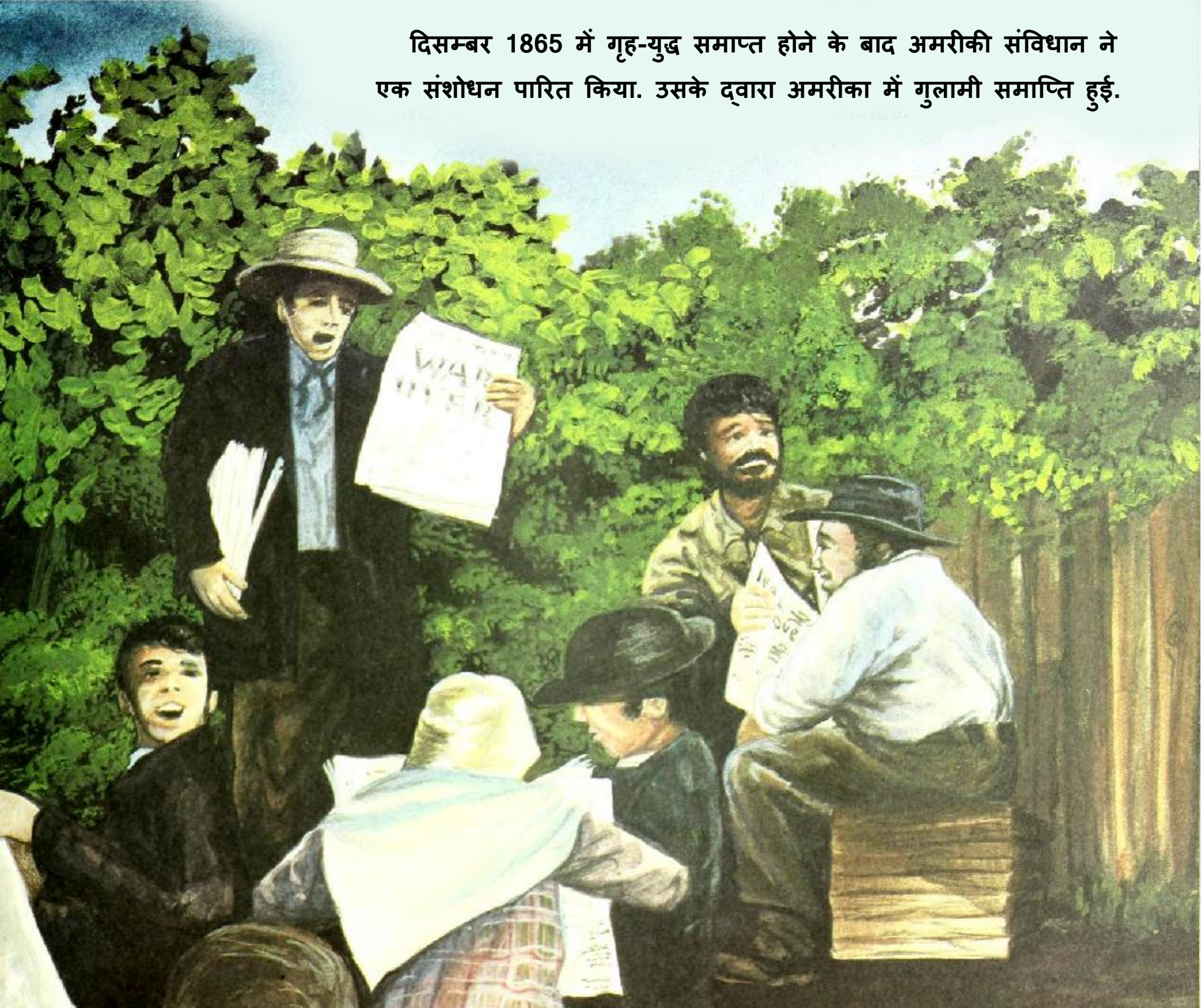


12 अप्रैल 1861 को उत्तरी और दक्षिणी अमरीका के बीच में गृह-युद्ध छिड़ा. युद्ध के समय हेरिएट ने उत्तर अमरीका की सेना में एक नर्स और जासूस का काम किया. वो बहादुरी से दुश्मन के इलाकों में गई और वहां से उसने सैकड़ों गुलामों को मुक्त कराया. हेरिएट ने उन गुलामों की भी मदद की जिन्होंने लड़ाई के दौरान उत्तर की ओर पलायन किया.





दिसम्बर 1865 में गृह-युद्ध समाप्त होने के बाद अमरीकी संविधान ने एक संशोधन पारित किया. उसके द्वारा अमरीका में गुलामी समाप्ति हुई.





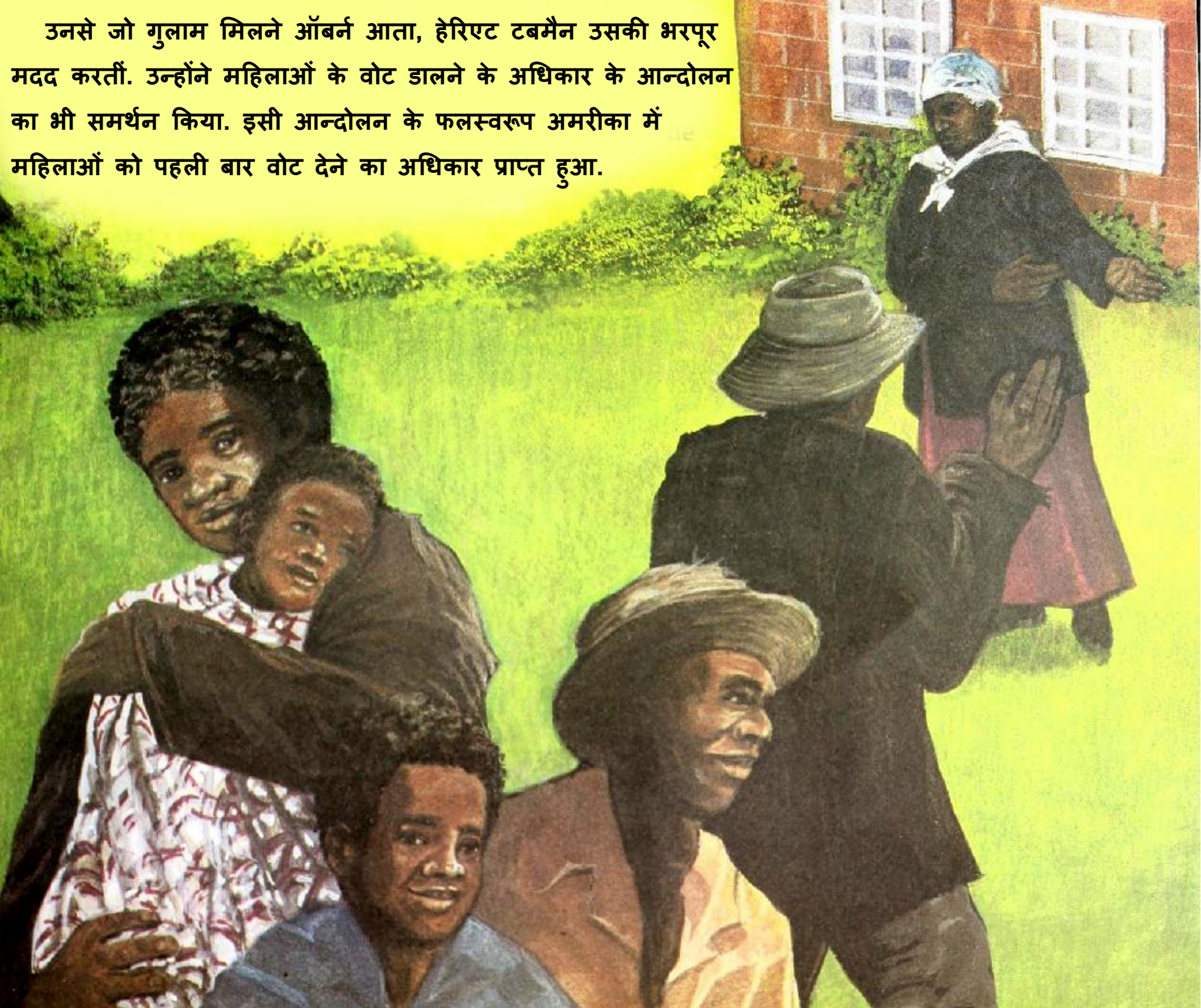


गृह-युद्ध के खत्म होने के बाद हेरिएट टबमैन अपने घर  
ऑबर्न, न्यू-यॉर्क वापिस लौटीं. जॉन टबमैन का 1867 में देहांत  
हो गया था. 1869 में हेरिएट टबमैन ने एक पूर्व गुलाम और  
उत्तरी अमरीकी सैनिक - नेल्सन डेविस से विवाह किया.

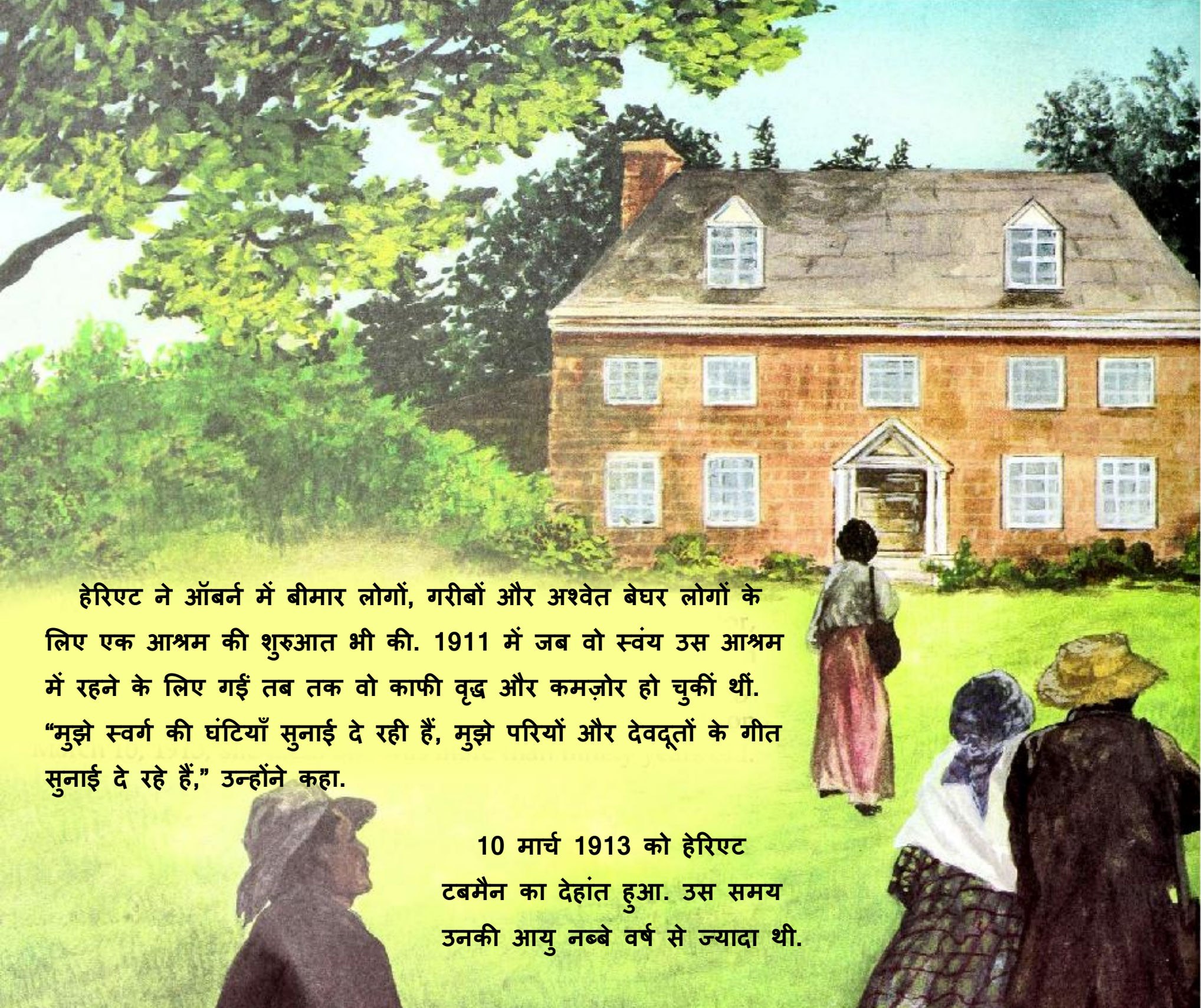
ऑबर्न में वो आजीविका के लिए घर-घर जाकर सब्जी बेंचती  
थीं. वो जहाँ भी जातीं लोग उनके **“अंडरग्राउंड रेलरोड”** के अनुभव  
जानने के बहुत इच्छुक होते.



उनसे जो गुलाम मिलने ऑबर्न आता, हेरिएट टबमैन उसकी भरपूर मदद करतीं. उन्होंने महिलाओं के वोट डालने के अधिकार के आन्दोलन का भी समर्थन किया. इसी आन्दोलन के फलस्वरूप अमरीका में महिलाओं को पहली बार वोट देने का अधिकार प्राप्त हुआ.



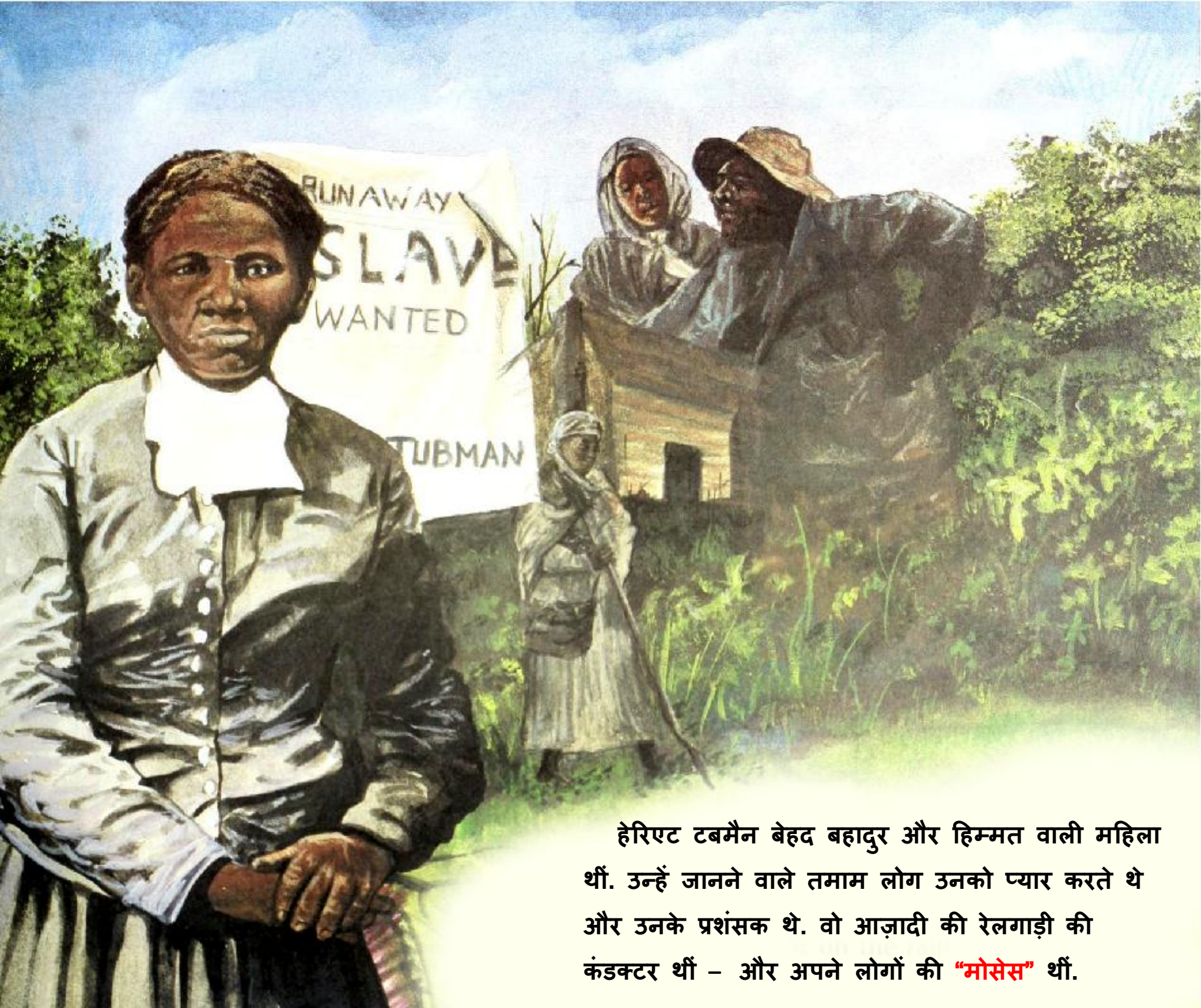




हेरिएट ने ऑबर्न में बीमार लोगों, गरीबों और अश्वेत बेघर लोगों के लिए एक आश्रम की शुरुआत भी की. 1911 में जब वो स्वयं उस आश्रम में रहने के लिए गईं तब तक वो काफी वृद्ध और कमज़ोर हो चुकीं थीं. “मुझे स्वर्ग की घंटियाँ सुनाई दे रही हैं, मुझे परियों और देवदूतों के गीत सुनाई दे रहे हैं,” उन्होंने कहा.

10 मार्च 1913 को हेरिएट टबमैन का देहांत हुआ. उस समय उनकी आयु नब्बे वर्ष से ज्यादा थी.





हेरिएट टबमैन बेहद बहादुर और हिम्मत वाली महिला थीं. उन्हें जानने वाले तमाम लोग उनको प्यार करते थे और उनके प्रशंसक थे. वो आज़ादी की रेलगाड़ी की कंडक्टर थीं – और अपने लोगों की **“मोसेस”** थीं.



### महत्वपूर्ण तारीखें

- 1820 या 1821 डोर्चेस्टर काउंटी, मेरीलैंड, अमरीका में जन्म. उनकी सही जन्म तिथि किसी को नहीं पता.
- 1835 जब वो एक गुलाम को भागने में मदद कर रही थीं तो उनके सिर पर लोहे के वज़न से चोट लगी.
- 1844 जॉन टबमैन से शादी. 1867 में जॉन टबमैन का देहांत.
- 1849 ब्रोडस फार्म से पेनसिलवेनिया के लिए पलायन.
- 1862-1864 उत्तरी अमरीकी सेना के लिए नर्स और गुप्तचर का काम.
- 1865 अमरीकी संविधान का तेरहवां संशोधन जिसने गुलामी को गैरकानूनी करार दिया. 6 दिसम्बर 1865 को वो कानून अमल में आया.
- 1869 नेल्सन डेविस से विवाह. 1888 में नेल्सन का देहांत.
- 1908 ऑबर्न, न्यू-यॉर्क में हेरिएट टबमैन होम फॉर एज्ड की स्थापना.
- 1913 10 मार्च को ऑबर्न, न्यू-यॉर्क में देहांत.



हेरिएट टबमैन एक गुलाम  
पैदा हुईं थीं. उन्हें गुलामी  
की ज़िन्दगी से नफरत  
थी. इसलिए “अंडरग्राउंड  
रेलरोड” से पलायन करके  
उन्होंने गुलामी और  
दासता से खुद मुक्ति पाई.  
हेरिएट ने “अंडरग्राउंड  
रेलरोड” से 300 से ज्यादा  
गुलामों को मुक्ति दिलाई.  
ये उनकी प्रेरक कहानी है.

